श्री गणेश स्वंय सहायता महिला बचत समूह

दुग्ध व्यवसाय ने बदली जीवन धारा

इंदौर जिले के गड़ी गांव की श्रीमती माया सत्यनारायण के पति के पास 5 बीघा खेती की जमीन थी। जमीन से उपज पर्याप्त न होने से घर चलाना मुश्किल हो रहा था। परिवार में दो बच्चों के अलावा बूढ़ी सास भी रहती थी। आमदनी कम होने के बावजूद माया को सामाजिक व पारिवारिक व्यवहार भी निभाने पड़ रहे थे। आमदनी से खर्च अधिक होने से दोनों बच्चों की शिक्षा का भार उठा पाना मुश्किल हो रहा था। माया की इच्छा थी कि वह अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दिला सके। इसी बीच सितंबर 2006 में दुग्ध सहकारी समिति गड़ी के माध्यम से श्री गणेश स्वंय सहायता महिला बचत समूह का गठन किया गया ,माया इस समूह की सदस्य बन गई और हर महीने रूपये 100 की बचत करने लगी। माया के घर में शौचालय एवं बाथरूम न होने से बहुत समस्या आती थी क्योंकि माया की लडकी बड़ी हो रही थी अतः दिनांक 8.2.07 को माया ने बचत समूह से रूपये 10 हजार का ऋण लेकर शौचालय एवं बाथरूम बनवाया।

माया ने दुग्ध सहकारी समिति गढ़ी के माध्यम से राष्ट्रीय महिला कोष से सन 2008 में ऋण लेकर एक गाय क्रय की, फिर जुलाई 2009 में पुनः राष्ट्रीय महिला कोष से ऋण लेकर एक गाय और खरीदी। इन दो गायों से माया को 22 लीटर दूध प्रति दिन प्राप्त होने लगा जिसे माया दुग्ध सहकारी गडी में देने लगी। दुग्ध विक्रय से माया को औसतन रूपये 400 की प्रति दिन की आय होने लगी। दिनांक 8.8.08 को कृषि कार्य हेतु रूपये 10 हजार का और ऋण लिया । माह के पूरे खर्च काटने के बाद अब लगभग 5000 रूपये की मासिक बचत माया को होने लगी। गायों को हरा चारा आदि खिलाने के लिए माया ने बचत समूह से रूपये 15 हजार का ऋण लेकर बोरिंग करवाया इस बोरिंग से खेत में हरा चारा उगाया जाने लगा साथ ही एक लंबा पाईप डालकर घर में पानी की व्यवस्था की गई।

दुग्ध व्यवसाय अपनाने तथा बचत समूह से जुड़ने से माया की आर्थिक समस्या का समाधान होने लगा। वर्तमान में माया का लडका 12 वीं क्लास में तथा लडकी 10वीं क्लास में पढ रही है माया की इच्छा बच्चों को आगे पढ़ाकर अच्छी डिग्री हासिल कराने की है तथा उन्हें विश्वास है कि भविष्य में भी दुग्ध व्यवसाय तथा बचत समूह के माध्यम से उनकी अन्य आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति हो सकेगी।

माया का घर कच्चा होने से बचत समूह से उन्होंने रूपये 30 हजार का ऋण लिया एवं अपनी आमदनी से भी बचत कर घर को पक्का बनवाने का कार्य माया कर रही हैं।

आज बचत समूह एवं दुग्ध विक्रय के माध्यम से माया अपने पति व बच्चों के साथ खुशहाल जीवन व्यतीत कर रही है।